ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An UGC Approved, High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

UGC Approval No: 48027

Vol. 6, Issue 12, December 2017

Marwar ke Dhandhal Rathore: Ek Adhyayan

Naresh Kumar Dhandey

Research Scholar, Department of History, Jai Narayan Vyas University, Jodhpur, India

भारतीय इतिहास में मारवाड़ मरू प्रदेश के रूप में विख्यात रहा है। वैदिक साहित्य में ऋग्वेद में मारवाड़ के लिए 'मरू' शब्द का उल्लेख हुआ है । वैदिक साहित्य के अलावा महाकाव्यों, संस्कृत शिलालेखों, पुस्तकों में भी मरू प्रदेश का उल्लेख हुआ है। 'अमरकोश' के लेखक ने भूमि वर्ग के अंतर्गत 'समानो मरू धान्वानो' कहकर मरू प्रदेश का उल्लेख किया है इसकी व्याख्या में मरू का अर्थ रेगिस्तान बताया गया है। मारवाड़ राजपूताने का पश्चिमी भाग है जिसके केन्द्र में जोधपुर है। जोधपुर राज्य (मारवाड़) राजपूताना के दक्षिण पश्चिम में 24 ˙22′ उ.अक्षांश से 27 ˙42′ उ. अक्षांश तथा 70 5′ पूर्वी देशान्तर से 75 ˙22′ पूर्वी देशांतर के बीच फैला हुआ है। इसका क्षेत्रफल 35016 वर्गमीलऔर इसका विस्तार यहां के सभी राज्यों से अधिक था। इसकी लम्बाई ईशान कोण से नैऋत्य कोण तक 320 मील और चौड़ाई उत्तर से दक्षिण 170 मील थी।[2] जोधपुर राज्य के उत्तर में बीकानेर, उत्तर–पश्चिम में जैसलमेर, पश्चिम में सिंध का थारपारकर जिला, दक्षिण–पश्चिम में कच्छ का रण, दक्षिण में पालनपुर और सिरोही, दक्षिण–पूर्व में उदयपुर, पूर्व में अजमेर–मेरवाड़ा तथा किशनगढ़ और उत्तर–पूर्व में जयपुर राज्य है।[3]

राठौड़ों से पूर्व मारवाड का इतिहास –: संक्षिप्त परिचय

सर्वविदित है कि प्रागैतिहासिक काल से ही इस क्षेत्र में मानव गतिविधियों के पदचिह्न दृष्टिगोचर होते हैं। तत्पश्चात क्रमशः मानवीय सभ्यता का विकास भी होने लग गया था। महाकाव्य काल में हमें यहाँ आभीर एवम् सोवीर जातियों के कार्यस्थली के रूप

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An UGC Approved, High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

UGC Approval No: 48027

Vol. 6, Issue 12, December 2017

में जानकारी प्राप्त होती है[4] महाभारत काल में यह राज्य पांडवों के अधीन था। तत्पश्चात महाजनपद काल में इस प्रदेश की जानकारी अभी स्पष्ट रूप से दिखायी नहीं देती है। मौर्यवंश की स्थापना तक के इतिहास में पुष्ट प्रमाणों का अभाव है।

चष्टन के पौत्र रूद्रदामन ने अपनी शक्ति का और अधिक विस्तार करने का कार्य किया। जिसकी जानकारी हमें उनकी जूनागढ़ प्रशस्ति से प्राप्त होती है जूनागढ़ प्रशस्ति के अनुसार उसने कई विजयें प्राप्त की,जिसके कारण उसके साम्राज्य की सीमाओं में अत्यधिक विस्तार हुआ। इसी से ज्ञात होता है कि उसने मरू प्रदेश भी विजित कर उसे भी अपने साम्राज्य का अंग बना दिया था। गुप्तकाल में समुद्रगुप्त ने प्रायः सम्पूर्ण भारत पर अपना शासन स्थापित कर लिया था। जिसके फलस्वरूप मारवाड़ भी गुप्त साम्राज्य का अंग बन गया। इस तथ्य की पुष्टि अभिलेखीय साक्ष्यों एवम् ऐतिहासिक नामावली से होती है। मण्डोर से प्राप्त दो शिलालेख भी इसी बात की पुष्टि करते है कि गुप्तों का प्रभाव मरू प्रदेश पर रहा था।[5] वि. स. 589 के आस–पास मालवा के राजा यशोधर्मन का मारवाड़ पर अधिकार हो गया था।[6] तत्पश्चात गुर्जर वंश के शासन की जानकारी प्राप्त होती है। हर्ष के पश्चात कन्नौज पर प्रतिहारों का आधिपत्य स्थापित हो गया। चावड़ों के क्षतविक्षत साम्राज्य के ध्वंसावशेषों पर प्रतिहार वंश के शासन का अभ्युदय हुआ। चावड़ों को समाप्त कर इन्होंने भीनमाल को अपनी राजधानी बनाया, इसी कालावधि में हर्ष की मृत्यु हो जाने से प्रतिहार नागभट्ट द्वितीय ने कन्नौज पर आक्रमण कर वहाँ पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया। इन प्रतिहार शासकों का मारवाड़ में सशक्त शासन होने की पुष्टि इनके विभिन्न अभिलेखों (बुचकला, ओसियां, घटियाला, जोधपुर अभिलेख) से होती है। इन अभिलेखों से ज्ञात होता है कि दसवीं सदी तक मारवाड़ में प्रतिहारों का शासन रहा।[7] इसी दौरान चौहान वंश का भी विकास राजस्थान में दृष्टिगोचर होता है। प्रारम्भिक अवस्था में नागौर के आसपास के क्षेत्र में इनका शासन था। वहाँ से धीरे–धीरे आगे बढते हुए शाकंभरी (सांभर) को अपनी राजधानी बनाया। शाकंभरी के चौहानों में से ही लक्ष्मण ने मारवाड़ के दक्षिण में नाडौल नामक स्थान पर अपना अधिकार स्थापित किया। नाडोल के चौहानों ने आगे चलकर जबालिपुर (वर्तमान जालौर) पर अधिकार स्थापित कर लिया। इस प्रकार मारवाड़ के

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An UGC Approved, High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

UGC Approval No: 48027

Vol. 6, Issue 12, December 2017

विभिन्न क्षेत्रों पर चौहानों का लम्बे समय तक शासन रहा।[8] वि. स. 998 में सोलंकी मूलराज गुजरात का शासक बना था। मूलराज के समय से ही सोलंकियों का अधिकार मारवाड़ के कुछ हिस्सों पर अवश्य हो गया था।

मारवाड़ पर राठौड़ों की सत्ता :-राठौड़ों का मारवाड़ में आगमन 13वीं शताब्दी के मध्य में हुआ जैसा कि उनके मूल पुरूष राव सीहा के मृत्यु स्मारक लेख से स्पष्ट है।[9] मारवाड़ (जोधपुर) में राठौंड़ों का मूल पुरुष राव सीहा था। राव सीहा का आगमन मारवाड़ में 13वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में माना जाता है। सेतराम के पुत्र राव सीहा के सम्बन्ध में विभिन्न विद्वानों ने अलग–अलग मत दिये हैं। राठौड़ वंश के इतिहास से ज्ञात होता है कि कई इतिहासकार राव सीहा को सेतराम का छोटा भाई मानते हैं। राव सीहा व उनके पुत्र वि.सं. 1268 में कन्नौज क्षेत्र से मारवाड़ में आए थे।[10] मारवाड़ रा परगनां री विगत के अनुसार कन्नौज से द्वारिका तीर्थ यात्रा करते समय अणहलवाड़ै पाटण में रुका और उसकी भेंट मूलराज सोलंकी से हुई। उसने अपनी पुत्री का विवाह सीहा से करने और लाखा फुलाणी को मारने की इच्छा व्यक्त की। इस पर सीहा ने कहा कि मैं पहले द्वारिका जाकर रणछोड़ जी की अभ्यर्थना कर आऊं फिर ईश्वर की आज्ञा होगी तो लाखा फुलाणी को जरूर मार गिराऊंगा। इस प्रकार सीहा द्वारिका यात्रा कर पुनः पाटण पहुंचा और चढ़ाई कर लाखा फुलाणी को खत्म किया। मूलराज ने अपनी पुत्री का विवाह सीहा के साथ कर दिया सीहा पुनः कन्नौज लौटा और वहीं उसकी मृत्यु हुई। सोलंकनी स्त्री से सीहा के तीन पुत्र हुए–आस्थान, सोनग और अज। खेड के शासक प्रतापसिंह कल्याणसिंहौत गोयल ने अपनी बहिन या पुत्री का विवाह राव आस्थाना जी के साथ किया था। डांभियों की सहायता से आस्थाना जी ने खेड पर अचानक आक्रमण किया, गोयल मारे गए, इस प्रकार राव आस्थान ने राव सीहा की अन्तिम इच्छा को पूरा कर मारवाड़ में एक स्थायी और सुदृढ़ राज्य की नींव स्थापित की। अब रावजी ने खेड़ को अपनी राजधानी बनाया। खेड़ प्राप्त होने पर 420 गाँव राव आस्थाना जी के अधिकार में आ गये। आस्थाना जी के पांच पुत्र हुए धूहड़, पोहड़, चाचिग, धांधल, जोपसा।[11]

Copyright to IJIRSET

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An UGC Approved, High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

UGC Approval No: 48027

Vol. 6, Issue 12, December 2017

राव धांधल राव सीहा के पौत्र एवं आस्थान के पुत्र राव धांधल वीर पुरुष हुए थे। इन्हीं धांधल के वंशज धांधल राठौड़ के नाम से विख्यात हुए। धांधल कोलूमढ़ के जागीरदार थे। धांधल का सर्वप्रथम बाड़मेर क्षेत्र के महेवा नामक स्थान पर आधिपत्य रहा था। उस स्थान को छोड़कर उन्होंने पाटण में अपना स्थान कायम किया था।[12] ख्यात ग्रन्थों में धांधल जी के सम्बन्ध में निम्नलिखित धारणाएं प्रचलन में रही हैं।

'ख्यात केरू' के अनुसार धांधल ने खेड़ से चलकर वहां के अधिपति किशोरसिंह को मारकर बाड़मेर हस्तगत किया था। वि.सं.1256 की महा सुदि 5 गुरुवार को कोलू बसाया। **'राठौड़ों की ख्यात'** में धांधल को आस्थान का तीसरा पुत्र बताया है जबकि धांधलो की ख्यात में धांधल को दूसरा पुत्र बताया है तथा मुहणौत नैणसी की ख्यात में भी धांधल को द्वितीय पुत्र बताया है। आस्थाना जी का तीसरा बेटा धांधल था।इससे वंशज धांधल कहलाये।[13] धांधलों की ख्यात में धांधल का जन्म वि.सं. 1236 में होना दर्शाया है। लेकिन राव सीहा का शिलालेख प्रकाश में आ जाने से इस संवत् की पुष्टि नहीं होती है। एक दिन राव आस्थान ने दरबार का आयोजन किया, उसमें उसने चारों पुत्रों को कहा कि खेड़ का राज्य तो किसी एक के पास रहेगा, इसलिये आप तीनों को कोई अन्य क्षेत्र पर अपना आधिपत्य जमाने का प्रयास करना चाहिए। राव आस्थान की यह बात सुनकर धांधल भरी सभा से उठ कर अपने पिता को मुजरा कर कहा कि आप मुझे इजाजत दें तो आपके पुण्य प्रताप से मैं अन्य क्षेत्र में अपना राज्य कायम करने का प्रयास करूंगा। धांधल की यह बात सुनकर सभा में बैठे सभी लोगों ने धांधल की इस बात की सराहना की।

सभा सबुल सबास दे, धांधल तूज सराय।
पिता तणां जो वचन ले, लीधो सीस चढाय।।''[14]

महाकवि मोडजी आसिया रचित पाबू प्रकाश महाकाव्य में राव धांधल की दो रानियों का तथा उनके 24 पुत्र–पुत्रियों का उल्लेख हुआ है वहीं अप्सरा की कोख से पाबू तथा सोनल का उल्लेख करते हुए कुल 26 संतान बताई गई है। इनमें से 13 पुत्र रानी भटियानी एवं शेष कमलादे गोहिल के बताये हैं। रानी भटियानी के तेरह पुत्रों के

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An UGC Approved, High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

UGC Approval No: 48027

Vol. 6, Issue 12, December 2017

नाम अग्रलिखित हैं – (1) जसोधन, (2) यणवल, (3) वीरवंत, (4) सिधराव, (5) नारायण, (6) सांडसिंह, (7) विक्रम, (8) करमसी, (9) करन, (10) गोविन्द (11) गजा (12) मंडलीक, (13) हाफा। इसके साथ ही रानी कमलादे के ग्यारह पुत्र इनमें एक पुत्री पेमा है। इन सब के नाम इस प्रकार से हैं– (1) बूड़ा, (2) नींबा, (3) बाहड़दे (4) धुरकाजल़ (5) रणधमल, (6) आल, (7) ऊदल, (8) वीरभांण, (9) पीथल, (10) सोम, (11) पेमा।[15]

पाबू जी राजस्थान के प्रमुख लोकदेवताओं में पाबूजी का नाम वचनपालक, संस्कृति के रक्षक, स्वाभिमान, कर्त्तव्यपरायण, क्षात्रधर्म का पालन करने वाले एवं प्रतिशोध की भावना रखने वाले के रूप में भी दैदीप्यमान है। इनकी गणना पांच पीरों में की जाती है। इस सम्बन्ध में एक प्राचीन दोहा आज भी विख्यात है –

''पाबू हड़बू रामदेव मांगलिया मेहा।
पांचू पीर पधार ज्यो, गोगादे जेहा।।''

राठौड़ वंश में जन्म लेने वाले इस दिव्य पुरुष ने अपने अलौकिक कार्यों से लोकमानस में अपना स्थान बनाया वह युगों–युगों तक चिर स्थायी रहेगा। पाबूजी की माता उर्वशी अप्सरा थी और पालन करने वाली माता कमलादेजी थी जो राव धांधलजी की बड़ी रानी थी। पाबूजी जब 5 वर्ष के थे तब धांधल का देहान्त हुआ। अनन्तर धांधल का उत्तराधिकारी पाबूजी का अग्रज बूड़ा बना, उत्तराधिकारी बनने पर उसके अधीनस्थ लोग उनकी चाकरी करने लगे वहीं पाबूजी राठौड़ अल्पायु में होते हुए भी बड़े ही चमत्कारी थे उनका अधिकांश समय सांड पर सवार हो शिकार में गुजरता था। पाबूजी और उनके भाई बूडा जिन्दराव खीची से लड़ते हुए काम आये। राव धांधल जी के पुत्र राव बूडा के एक मात्र पुत्र की जानकारी राव झरडा़ के रूप में मिलती है झरडा जी ने जीन्दराव खींची को मारकर अपने पिता और चाचा का बदला लिया इस प्रकार राव झरडा ने पुनः कोलू पर अधिकार कर लिया और फिर इनके वंशज धांधल करणों तक कोलू में जमे रहे धांधल करणों ने जोधपुर शासक मालदेव के पाचवें पुत्र उदयसिंह की संकट के समय

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An UGC Approved, High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

UGC Approval No: 48027

Vol. 6, Issue 12, December 2017

सहायता की थी ऐसी स्थिति में जब उदयसिंह जोधपुर के शासक बने तब धांधल करणों को जोधपुर राज के रसोड़े का अधिकारी बनाया और 'काका' संबोधन से पुकारने लगे उस समय धांधल करणों के वशंज नथमल जी धांधल से सालवा की पीढी कायम हुई।इस प्रकार धांधल राठौड़ों के गौरवमय इतिहास में लोकदेवता के रूप में जहाँ पाबूजी ने अपनी अगम्य प्रतिभा को चहुँदिशा में दैदीप्यमान किया वहीं इनके वंशजों ने जोधपुर राज्य के स्वामिभक्त सेवक के रूप में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई रसोड़े की दरोगाई, सुतरखाने की दरोगाई जैसे महत्त्वपूर्ण पदों पर रहकर अपनी कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

धांधल राठौड़ौ के प्रमुख ठिकाने –: धांधल राठौड़ों के पट्टे के गावों की सूचनाएँ जोधपुर राज्य की पट्टा–बहियों में एवं उनके द्वारा जो गांव बसाये गये वह जानकारी राज्य की सनद बहियों से ज्ञात होती है। पट्टा बहियों में अलग–अलग ठिकानों का पट्टा जारी करते समय उनकी रेख के अनुसार उनको चाकरी करने के रूप में एक निश्चित राशि राज्य में जमा करानी पड़ती थी। यह राशि उत्तराधिकार शुल्क के रूप में ली जाती थी, जो हुकमनामा एवं नजराणा के नाम से जानी जाती थी। अतः धांधल राठौड़ों को मिले पट्टो के गांवों की तथ्यात्मक जानकारी इन पुरालेखीय सामग्री के आधार पर दी गई। मारवाड़ राज्य द्वारा धांधलों को मिले पट्टे के ठिकानों का वर्णन किया जा रहा है। इनमें 1.केरू, 2. सालवा, 3. चिचड़ली, 4. रोयला, 5. नान्दड़ा, 6. जाजीयाली, 7. सेवकी, 8. वेडियास आदि प्रमुख है। इन ठिकानों के धांधल राठौड़ों का वर्णन किया गया है। साथ ही धांधलों द्वारा बसाये गये गांव जैसे कोलूमढ़, केरू, चांदरक, बूटैलाव, मोकलावास इत्यादि प्रमुख है।

सालवा –: सालवा ठिकाना धांधल राठौड़ों का प्रथम ठिकाना रहा है। यह ठिकाना जोधपुर से 42 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। ख्यात ग्रन्थों से ज्ञात होता है कि महाराजा उदयसिंह की ओर से करणसिंह के पुत्र नथमल को सालवा गांव का पट्टा मिला था।

केरू –: जोधपुर का केरू ठिकाना स्टेशन से 24 किलोमीटर की दूरी पर उत्तर–पश्चिम में स्थित है। केरू ठिकाने का ठिकानेदार गोविन्ददास था। धांधलों की ख्यात के अनुसार जोधपुर रियासत के केरू गांव में धांधल राठौड़ों का आरम्भ गोयंददास से माना जाता है। धांधल राठौड़ों के प्रमुख ठिकानों में केरू ठिकाने का महत्वपूर्ण स्थान था। यहाँ के

IJIRSET

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An UGC Approved, High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

UGC Approval No: 48027

Vol. 6, Issue 12, December 2017

जागीरदार जोधपुर राज्य के शासकों के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित रहे थे। वहीं इन्होंने न सिर्फ युद्ध अभियानों में भाग लिया बल्कि अपनी निष्ठावान सेवाएं भी समय–समय पर देते रहे। फलस्वरूप इन्हें केरू ठिकाने के साथ ही **गेलावास** ठिकाना भी मिला था। शासकों की ओर से इन्हें विभिन्न पदों पर नियुक्तियां भी मिली जिनमें सूतरखाना का दरोगा, रसोड़े की दरोगाई का पद प्रमुख रूप से था।

गांव छापला –: जोधपुर से 93 किमी. की दूरी पर धांधल राठौड़ों का ठिकाना छापला स्थित है। पट्टा बही के अनुसार सालवा के उदयकरण (सालवा–5) के वंशजों को वि.सं. 1851 में महाराजा भीमसिंह की ओर से गांव छापला इनायत किया गया था।[16]

चींचड़ली ठिकाना –: जोधपुर से 47 किमी. की दूरी पर चींचड़ली ठिकाना स्थित है। गोयंददास (केरू) के तीसरे पुत्र लिखमीदास हुए। लिखमीदास महाराजा अभयसिंह की सेवा में थे । महाराजा ने प्रसन्न होकर इनको वि.सं. 1789 में चींचड़ली गांव पट्टे में दिया।[17]

रोयाला –: जोधपुर से 26 किमी. की दूरी पर यह ठिकाना स्थित है। यह ठिकाना अलग–अलग समय में रोहिला, रोयला, रोईला के नाम से जाना जाता रहा था। वर्तमान में यह रोयला ठिकाना भाखरवाला के नाम से जाना जाता है। महाराजा अभयसिंह की ओर से जेतसिंह के द्वितीय पुत्र सूरतसिंह को रोयला ठिकाना सर्वप्रथम प्रदान किया गया था। **अन्य ठिकानों** में **चाँदरक** ठिकाना जोधपुर से 74 किमी. की दूरी पर स्थित है।साथ ही **नांदडा** ठिकाना जोधपुर से 17 किमी. की दूरी पर स्थित है। **सेवकी** ठिकाना जोधपुर से 49 किमी. की दूरी पर स्थित है।

राठौड़ों की अल्पज्ञात शाखा विशेष में धांधल राठौड़ों का जोधपुर राज्य के इतिहास में अभूतपूर्व योगदान रहा था। राज्य की ओर से इन्हें प्रशासन में कई महत्त्वपूर्ण पद मिले जिनका दायित्त्व इन्होंने बखूबी निभाया। मुख्य रूप से इन धांधल राठौड़ों को मुसायब, किलेदार, कोतवाल, रसौड़े की दरोगाई, सुतरखाने की दरोगाई के अलावा मारवाड़ के विभिन्न परगनों में कोतवाल के पद मिले हुए थे। इनके अलावा धांधलो ने

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An UGC Approved, High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

UGC Approval No: 48027

Vol. 6, Issue 12, December 2017

मारवाड़ राज्य की सुरक्षा में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन धांधलों ने जोधपुर राज्य की ओर से लड़ी जाने वाली अनेक लड़ाइयों में भाग लेकर न सिर्फ स्वामी धर्म का निर्वाह किया बल्कि प्राणोत्सर्ग कर अपने कुल को गौरवान्वित भी किया। मुख्य रूप से इन राठौड़ों के द्वारा धरमत के युद्ध, अहमदाबाद के युद्ध, मेड़ता के युद्ध और जोधपुर गढ़ के घेराव में सेवाएं अर्पित की गई ।

संदर्भ

1 सिह अमर : अमरकोश,कॉड–2, भूमि वर्ग, श्लोक–5

2 रेउ वी.एन.: मारवाड का इतिहास, : भाग–1,पृष्ठ 1–5, ऑर्कियोरलोजीकल डिपार्टमेंटल जोधपुर–1940

3 ओझा गौरीशंकर हीराचंद : जोधपुर राज्य का इतिहास भाग–1, व्यास एंड सनस प्रकाशन अजमेर 1995, पृष्ठ–2

4 वाल्मीकि : रामायण – युद्व कांड, सर्ग–12

5 रेउ वी,एन : मारवाड का इतिहास भाग–1,पृष्ठ–5

6 ओझा गौरीशंकर हीराचंद –: जोधपुर राज्य का इतिहास भाग–1, व्यास एंड सनस प्रकाशन अजमेर 1995, पृष्ठ–48

7 व्यास डॉ मांगीलाल –: जोधपुर राज्य का इतिहास, पृष्ठ–10

8 व्यास डॉ मांगीलाल –: जोधपुर राज्य का इतिहास, पृष्ठ–18

9 ओझा गौरीशंकर हीराचंद : जोधपुर राज्य का इतिहास भाग–1, पृष्ठ–156–157

10 राठौड़ तेजसिंह – : राठौड़ वंश का इतिहास, राजस्थानी ग्रंथागार जोधपुर–2014, पृष्ठ– 8–9

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An UGC Approved, High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

UGC Approval No: 48027

Vol. 6, Issue 12, December 2017

11 भाटी डॉ विक्रमसिंह (सं) : मुरारीदान की ख्यात, रॉयल प्रकाशन जोधपुर– पृष्ठ–18

12 भाटी डॉ विक्रमसिंह : मारवाड इतिहास एवं संस्कृति के सोपान,महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाशन शोध संस्थान जोधपुर, पृष्ठ–139

13 दास श्यामल : वीर विनोद, भाग–3,उदयपुर राज्य द्वारा प्रकाशित, पृष्ठ–799

14 राठौड़ डॉ विक्रमसिंह : धांधलो री ख्यात, राजस्थानी शोध संस्थान चौपासनी जोधपुर–2006, पृष्ठ–26

15 आशिया शंकरसिंह (सं) –:पाबू प्रकाश महाकाव्य, राजस्थानी ग्रंथागार जोधपुर–2009, पृष्ठ–87

16 पट्टा बही संख्या–12, राजस्थान राज्य अभिलेखागार जोधपुर

17 राठौड़ डॉ विक्रमसिंह : धांधलो री ख्यात,राजस्थानी शोध संस्थान चौपासनी जोधपुर–2006, पृष्ठ–69